

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के माता—पिता सम्बन्धों का उनके संवेगात्मक बुद्धि में सहसम्बन्ध का अध्ययन

डॉ गार्गी ओझा

शोध—निर्देशिका, असिस्टेंट प्रोफेसर

शिक्षक—शिक्षा विभाग

नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

प्रेमचन्द्र यादव

शोधछात्र, (शिक्षाशास्त्र)

शिक्षक—शिक्षा विभाग

नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।



सारांश— प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र—छात्राओं के माता—पिता सम्बन्धों का उनके संवेगात्मक बुद्धि में सहसम्बन्ध का अध्ययन करना है। प्रयागराज जनपद में संचालित यू०पी० बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक स्तर के दो विद्यालयों का आकस्मिक न्यादर्शन विधि द्वारा चयन किया गया है। पुनः प्रत्येक विद्यालय से 25—25 छात्रों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया गया है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के माता—पिता सम्बन्धों को मापने के लिए डॉ० नलिनी राव द्वारा सृजित अभिभावक सम्बन्ध परीक्षण तथा विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि को मापने के लिए डॉ० अरुण कुमार सिंह एवं डॉ० श्रुति नारायण द्वारा निर्मित “संवेगात्मक बुद्धि मापनी” का प्रयोग किया गया है। ऑकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या हेतु सहसम्बन्ध गुणांक आर्घूण सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययनोपरान्त निष्कर्ष रूप में अभिभावक सम्बन्ध का संवेगात्मक अन्तर्बोध, अभिप्रेरण अन्तर्बोध एवं संवेगात्मक बुद्धि के बीच सकारात्मक सम्बन्ध है जबकि अभिभावक सम्बन्ध का संवेगात्मक बुद्धि की विमा समानुभूति एवं सम्बन्ध प्रबन्ध के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं पाया गया।

की—वर्ड — माध्यमिक स्तर, छात्र—छात्राएँ, माता—पिता सम्बन्ध, संवेगात्मक बुद्धि, सहसम्बन्ध

प्रस्तावना—

संवेग के बारे में मैकडूगल ने कहा है कि संवेग अनुभव का एक ढंग है, कार्य करने का एक तरीका है, क्रियाशीलता का एक तरीका है। इस कथन की सार्थकता किशोरावस्था के संवेगात्मक विकास में पायी जाती

है। किशोर अनुभव को प्रकट करता है और अनुभव भी करता है, साथ ही साथ अत्यधिक क्रियाशील भी होता है। इस क्रियाशीलता के कारण किशोर के संवेगों में अस्थिरता पायी जाती है जैसा कि शैशवावस्था में पाया जाता है।

किशोर के संवेगों में अस्थिरता होने से उसे समायोजन करने की समस्या का सामना करना पड़ता है। वह अनुकूल परिस्थितियों में प्रोत्साहन पाता है और प्रतिकूल परिस्थितियों में निराशा पाता है। यह निराशा आत्महत्या की भावना एवं क्रिया तक पहुँच जाती है। इस सम्बन्ध में **बी०एन० झा** महोदय का कथन उपयुक्त है, उनके मतानुसार— किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास इतना विचित्र होता है कि किशोर एक ही परिस्थिति में विभिन्न अवसरों पर विभिन्न प्रकार का व्यवहार करता है। एक अवसर उसे उल्लास से भर देती है, वही परिस्थिति दूसरे अवसर पर उसे खिन्न कर देती है।

किशोरावस्था में संवेगों की अभिव्यक्ति का ढंग ही कुछ बदला हुआ होता है। किशोर की संवेगात्मक अभिव्यक्ति उसकी शारीरिक अभिवृद्धि, ज्ञान, अनुभव एवं रुचियों पर आधारित होती है। हरलॉक ने संवेगों की परिवर्तनशीलता के बारें में लिखा है— संवेगात्मकता व्यक्ति का स्वास्थ्य दिन के समय वातावरण सम्बन्धित प्रभाव और कारकों पर आश्रित रहने की वजह से समय—समय पर परिवर्तित होता रहता है। किशोरावस्था में यौन अंगों का तीव्र विकास होने के कारण प्रेम व स्नेह नामक संवेग अधिक बढ़े हुए रूप में होता है। यह संवेग विषम लिंगीय के प्रति आकर्षण के रूप में अभिव्यक्त होता है।

शारीरिक शक्ति एवं संवेगात्मक विकास में उच्च सहसम्बन्ध पाया जाता है। इसीलिए सबल एवं सशक्त किशोरों में संवेग अधिक स्थिर एवं तीव्र होते हैं, और उनकी अभिव्यक्ति में भी तीव्रता पायी जाती है। इसके विपरीत अस्वस्थ और निर्बल किशोरों में संवेग निर्बल और अधिक अस्थिर पाये जाते हैं उनका प्रकाशन दबा—दबा सा होता है।

किशोरावस्था में बालक के मन में दैनिक मूलभूत आवश्यकता की पूर्ति पर विशेष ध्यान नहीं रहता है। उसकी दैनिक पूर्ति माता—पिता द्वारा हो जाती है। इस कारण वह उन महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यन नहीं जाता है। शारीरिक रूप से स्वास्थ्य ठीक रहता है जिससे किशोर सिर्फ व्यक्तित्व एवं संवेगात्मक विषयों पर अधिक बल देता है। इस विषय में चिकित्सक **डॉ० त्रेहान** ने लिखा है— ‘किशोर बच्चों में शारीरिक कमजोरी या बीमारी नहीं पायी जाती है। आकस्मिक दुर्घटना ही मात्र प्रभावित कर सकती है। इसी कारण किशोरावस्था में बच्चे शारीरिक आवश्यकताओं पर विशेष ध्यान नहीं देते हैं।’ डॉ० त्रेहान के विचारों से स्पष्ट होता है कि शारीरिक स्वास्थ्य से बढ़कर शारीरिक सुन्दरता होती है। वे समाज में स्वयं को अच्छा साबित करना चाहते हैं। इसके लिए वे किसी भी रास्ते को अपनाने के लिए तैयार रहते हैं। **डॉ०एस०एन० उपाध्याय** ने लिखा है कि— ‘किशोर बच्चों में सामाजिक सम्मान पाना सर्वोच्च लक्ष्य होता है।’

सुनीता सक्सेना ने अपनी पुस्तक 'इककीसर्वीं सदी में स्त्री' में लिखा है कि— 'किशोरावस्था में बालिकाओं पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, वे भावनाओं से कार्य करती है, इस कारण गलती होने की सम्भावना रहती है। परिवार एवं समाज का दायित्व है कि बालिकाओं को उचित मार्गदर्शन करें।' ये सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक विद्वान किशोरों को परिवार एवं समाज में हो रहे तत्कालीन परिवेश में अध्ययन है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि किशोरावस्था में व्यक्तित्व विकास एवं संवेगात्मक विकास चरम पर रहता है। उसको सही दिशा की ओर मोड़ने की आवश्यकता है। इसके लिए माता-पिता के साथ-साथ परिवार के अन्य सदस्य एवं समाज का उत्तरदायित्व बढ़ जाता है।

आधुनिक शिक्षा में वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों के उदय से शिक्षण व्यवस्था में जटिलता प्रवेश कर गयी जिसमें छात्र आधुनिक समय में वह उन्हें तभी पूर्ण करने में समर्थ हो सकता है जब वह मानसिक रूप से स्वस्थ हो क्योंकि शिक्षण प्रक्रिया मानसिक प्रक्रिया होती है जिसमें मस्तिष्क का मस्तिष्क से सम्बन्ध स्थापित किया जाता है। कोई भी व्यक्ति अपने कार्यों को सुचारू रूप से तभी सम्पन्न कर सकता है जब वह शारीरिक रूप से व मानसिक रूप से स्वस्थ हो और कार्य क्षेत्र से सन्तुष्ट हो और उसमें अधिक से अधिक समायोजित पूर्ण ढंग से कार्य करता है क्योंकि दबाववश या अरुचिपूर्ण ढंग से किये कार्य से मानसिक संतोष प्राप्त नहीं होता है और असंतोष से उस कार्य में सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती है तथा असफलता से शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होता है।

बालक के विकास एवं शैक्षिक विकास को प्रभावित करने वाले कारकों में वंशानुक्रम, परिवार, परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थितियाँ, स्वास्थ्य, माता-पिता की शिक्षा तथा विद्यालय के वातावरण महत्वपूर्ण कारक हैं। वंशानुक्रम और वातावरण संवेगात्मक बुद्धि के लिए सर्वाधिक उत्तरदायी माने गये हैं। यह वातावरण बालक के लिए दो प्रकार का होता है— प्रथम पारिवारिक और द्वितीय सामाजिक।

समस्या कथन—

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के माता-पिता सम्बन्धों का उनके संवेगात्मक बुद्धि में सहसम्बन्ध का अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य—

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्माण कर अध्ययन किया गया है—

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के माता-पिता सम्बन्धों का उनके संवेगात्मक बुद्धि में सहसम्बन्ध का अध्ययन।

2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के माता—पिता सम्बन्धों का उनके संवेगात्मक बुद्धि की विमाओं संवेगात्मक अन्तर्बोध, अभिप्रेरण अन्तर्बोध, समानुभूति, सम्बन्ध प्रबन्धन के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ—

अध्ययन में उद्देश्यों के परिप्रेक्ष्य में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है।

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के माता—पिता सम्बन्धों का उनके संवेगात्मक बुद्धि के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के माता—पिता सम्बन्धों का उनके संवेगात्मक बुद्धि की विमाओं संवेगात्मक अन्तर्बोध, अभिप्रेरण अन्तर्बोध, समानुभूति, सम्बन्ध प्रबन्धन के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

प्रस्तुत अध्ययन की विधि—

प्रस्तुत शैक्षिक अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सहसम्बन्धात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या—

प्रयागराज जनपद के हिन्दी माध्यम माध्यमिक विद्यालयों के सभी छात्र—छात्राओं को प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों के सामान्यीकरण हेतु जनसंख्या माना गया है।

न्यादर्श—

प्रयागराज जनपद में संचालित य०पी० बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक स्तर के दो विद्यालयों का आकस्मिक न्यादर्शन विधि द्वारा चयन किया गया है। पुनः प्रत्येक विद्यालय से 25—25 छात्रों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के माता—पिता सम्बन्धों को मापने के लिए डॉ० नलिनी राव द्वारा सृजित अभिभावक सम्बन्ध परीक्षण तथा विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि को मापने के लिए डॉ० अरुण कुमार सिंह एवं डॉ० श्रुति नारायण द्वारा निर्मित “संवेगात्मक बुद्धि मापनी” का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकी विधि

ऑकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या हेतु सहसम्बन्ध गुणांक आर्धूण सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

उद्देश्य-1 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के माता-पिता सम्बन्धों का उनके संवेगात्मक बुद्धि में सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

H₀₁ माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के माता-पिता सम्बन्धों का उनके संवेगात्मक बुद्धि के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

तालिका – 1

संवेगात्मक बुद्धि की विमार्ह	संख्या (N)	सहसम्बन्ध गुणांक r का मान
संवेगात्मक अन्तर्बोध	50	0.277*
अभिप्रेरण अन्तर्बोध	50	0.289*
समानुभूति	50	0.238
सम्बन्ध प्रबंधन	50	0.088
सम्पूर्ण संवेगात्मक बुद्धि	50	0.284*

*0.05 स्तर पर सार्थक

विद्यार्थियों के अभिभावक सम्बन्ध का संवेगात्मक अन्तर्बोध, अभिप्रेरण अन्तर्बोध, समानुभूति एवं संवेगात्मक बुद्धि के मध्य r का मान क्रमशः 0.277, 0.289 एवं 0.284 है जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत है अतः अभिभावक सम्बन्ध का संवेगात्मक अन्तर्बोध, अभिप्रेरण अन्तर्बोध एवं संवेगात्मक बुद्धि के बीच धनात्मक सम्बन्ध है। अर्थात् अभिभावक सम्बन्ध उच्च होने पर संवेगात्मक अन्तर्बोध, अभिप्रेरण अन्तर्बोध एवं संवेगात्मक बुद्धि उच्च होगा।

विद्यार्थियों के अभिभावक सम्बन्ध का समानुभूति एवं सम्बन्ध प्रबंधन के मध्य r का मान क्रमशः 0.238 एवं 0.088 है जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत है अतः अभिभावक सम्बन्ध का में सम्बन्ध नहीं है।

निष्कर्ष-

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये—

अभिभावक सम्बन्ध का संवेगात्मक अन्तर्बोध, अभिप्रेरण अन्तर्बोध एवं संवेगात्मक बुद्धि के बीच सकारात्मक सम्बन्ध है जबकि अभिभावक सम्बन्ध का संवेगात्मक बुद्धि की विमा समानुभूति एवं सम्बन्ध प्रबन्ध के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं है।

प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर परिणाम प्राप्त होता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में माता-पिता सम्बन्ध का उनके संवेगात्मक बुद्धि में धनात्मक सम्बन्ध पाया गया। यह परिणाम यह दर्शाता है कि माता-पिता का सम्बन्ध बच्चों के संवेगात्मक पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। जैसा कि पूर्व अध्ययनों से इंगित होता है। समीरा, नाहिद एवं असमा (2015) ने अध्ययन के उपरान्त स्पष्ट होता है कि पारवारिक शैली के बीच अनोखा सम्बन्ध है और पारिवारिक शैली में छात्राओं को विशेष लाभ मिलता है। चन्द्रन, अर्चना एवं नैयर, बिन्दू पी. (2015) ने पारस्परिक सम्बन्ध से जुड़े अध्ययन इंगित करते हैं कि किशोरों का पारिवारिक वातावरण का उनके संवेगात्मक बुद्धि के विभिन्न आयामों से सार्थक सम्बन्ध है, सिवाय अन्तर्वैयक्तिक गुण के। किशोरों के संवेगात्मक बुद्धि के आक्रामक विश्लेषण बताते हैं कि मातृक प्रभाव एवं रिश्ते किशोरों के संवेगात्मक बुद्धि एवं अन्तर्वैयक्तिक गुण को सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। मिर्जाहुसैनी, हसन (2016) ने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि परिवार के संवेगात्मक वातावरण का विद्यार्थियों से सार्थक रूप से जुड़ाव है। स्पष्ट रूप से हम पाते हैं कि परिवार की संवेगात्मक बुद्धि, खुशी एवं प्रेरणा विद्यार्थियों में अहम् भूमिका निभाते हैं। प्रकाश, अरुण एवं विमल, कृष्णा (2016) ने अध्ययन में पाया गया कि महिला विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का स्तर पुरुष विद्यार्थियों से बेहतर था।

अतः माता-पिता द्वारा अपने बच्चों के साथ स्वच्छंदता एवं स्वतंत्रता की भावना रखनी चाहिए तथा किशोरावस्था के बालक-बालिकाओं के आत्म-प्रकटीकरण पर रोक नहीं लगाना चाहिए साथ ही साथ उनके बातों को सुनना चाहिए तथा उनके बातों को गौर करना चाहिए जिससे वे बेझिझक अपने बातों को माता-पिता के साथ कह सकें जिससे उनका व्यक्तित्व विकास एवं संवेगात्मक बुद्धि प्रभावित न हो सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- त्रेहान, सैम (2014). मानव शरीर के गम्भीर रोग, जयपुर : क्लासिक पब्लिकेशन, पृ० 48
- उपाध्याय, एस0एन0 (2000). शिक्षा मनोविज्ञान, पटना : पटना पब्लिकेशन, पृ० 14
- सक्सेना, सुनीता (2015). इक्कीसवीं सदी में स्त्री, लखनऊ : लोरिक प्रकाशन, पृ० 31

- चौधरी, स्वरनाली एवं मित्रा, मंदीप (2015). पैरेन्टिंग स्टाइल एण्ड एलुस्ट्रिक बिहैवियर ऑफ एडोल्वसेन्ट्स लाइफ. जर्नल ऑफ रिसर्च इन ह्युमिनिस्टिक एण्ड सोशल साइंस, वॉल्यूम-3, इश्शू-6, पृ० 20-24
- जोयल एवं शर्मा (2015). इम्पैक्ट ऑफ इमप्लाएमेन्ट ऑफ मदर्स ऑफ सेल्फ कन्सेप्ट ऑफ एडोल्वसेन्ट्स. इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ ह्युमिनिस्टिक्स एण्ड सोशल साइंस इनवेन्शन, वाल्यूम-4, इश्शू-3, पृ० 17-25
- समीरा, नाहिद एवं असमा (2015). द स्टडिज ऑफ रिलेशनशिप बिटविन पैरेन्टल स्टाइल्स विथ इमोशनल इंटेलिजेन्स इन एलिमेन्ट्री स्कूल्स स्टूडेन्ट्स ऑफ माको. प्रोसिडिया— सोशल एण्ड बिहैविरल सांइसेन्स, 205(2015). 221.227
- चन्द्रन, अर्चना एवं नैयर, बिन्दू पी. (2015). फैमिली क्लाइमेट एस ए प्रेडिकेटर ऑफ इमोशनल इंटेलिजेन्स इन एडोल्वसेन्ट्स. जर्नल ऑफ द इण्डियन ऐकेडिमिक ऑफ एप्लाइड सॉइकोलॉजी, 41(1). 167-173
- मिर्जाहुसैनी, हसन (2016). सर्वेयिंग द रिलेशनशिप ऑफ फैमिली इमोनशनल एटमॉसफियर विथ इमोशनल इंटेलिजेन्स एण्ड हैप्पिनेस ऑफ स्टूडेन्ट्स. द कैसपियन सिस जर्नल, 10(1). सप्लीमेन्ट 4, 07-11
- प्रकाश, अरून एवं विमल, कृष्ण (2016). ए जेण्डर बेस स्टडी ऑफ इमोशनल इंटेलिजेन्स ऑफ शिड्यूल कॉस्ट स्टूडेन्ट्स. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस ऑफ इन्टरडिसिप्लिनरी रिसर्च. 5(2). 113-121
- भट्टाचार्य, फाल्गुनी (2016). एडोल्वसेन्ट्स होम प्रसेष्यान्स ऑफ देयर इमोशनल इंटेलिजेन्स एण्ड सोशल मैच्युरटी. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ होम सांइस, 2(1). 144-150
- सिंह, जागृति एवं अन्य (2017). पैरेन्टिंग एण्ड फैमिली एडजेस्टमेन्ट एमंग पैरेन्ट्स ऑफ चिल्ड्रेन एण्ड एडोल्वसेन्ट्स विथ इन्टलेक्चुएल डिसएबिल्टी एण्ड फंक्शनल साइकोसिस : ए कर्मेटिव स्टडी. इण्डिया जर्नल ऑफ साइकिर्टिक सोशल वर्क, 8(1), पृ० 14-20